

हिन्दी जाति की अवधारणा और रामविलास शर्मा : समीक्षात्मक अध्ययन - 2

डॉ. अजय कुमार विन्द

असि. प्रो. हिन्दी विभाग

राजकीय महाविद्यालय, नानौता, सहारनपुर

drajaybind@gmail.com

जातीय चेतना के निर्माण की प्रक्रिया का जनतंत्र के विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान है। डॉ. शर्मा ने स्पष्ट किया है कि 'जातीय चेतना केवल भाषागत, प्रदेशगत चेतना नहीं है। उसमें साम्राज्य-विरोध, सामन्ती रूढ़ियों का विरोध और समाज को पुनर्गठित करने की धारणाएँ शामिल हैं।' फिलहाल हिन्दी प्रदेशों में साम्राज्य-विरोध और सामन्ती रूढ़ियों के विरोध का स्तर उन गैर-हिन्दी प्रदेशों से बहुत नीचे है, जहाँ जातीय स्वाभिमान की ऊँची लहरें हैं। कार्ल मार्क्स ने जो विश्व दृष्टि सम्पूर्ण मानव जाति को प्रदान की उसकी नजर से डॉ. शर्मा ने हमारे राष्ट्रीय एवं जातीय स्वरूपों के महत्व को पहचान कर उनकी व्याख्या एवं विश्लेषण किया।

1857 से 1947 तक कुल 90 वर्षों तक के शासन काल में अंग्रेजों ने हिन्दी जाति के विकास को हर तरह से रोकने, उन्हें दबाने, साम्प्रदायिकता और भाषा के आधार पर उन्हें विभाजित करने की नीति अपनाई। उनके प्रति घृणा का प्रचार किया। 'काउबेल्ट' कहकर उपेक्षित करते रहे। उनकी भाषा और संस्कृति को खण्ड-खण्ड करके देखने की प्रवृत्ति विकसित की। ग्रियर्सन जैसे भाषा वैज्ञानिकों ने हिन्दी के समानान्तर 'बिहारी' नामक भाषा की कल्पना की और हिन्दी की ही कुछ बोलियों को उसमें रखा। सबसे खेदजनक बात तो यह है कि आजादी के बाद भारत के बुद्धिजीवियों तक ने वस्तुस्थिति के विश्लेषण की कोशिश नहीं की और हिन्दी जाति को हिकारत की नजर से देखते रहे। डॉ. शर्मा ने

पहली बार अंग्रेजों की उस कुचाल का पर्दाफाश किया और हिन्दी जाति के स्वरूप को पहचानने की सार्थक कोशिश की। डॉ. शर्मा के रूप में हिन्दी जाति को पहला आधुनिक सच्चा प्रतिनिधि मिला जो सही अर्थों में अपनी जाति का प्रवक्ता भी है। वे अंग्रेजी के विद्वान थे लेकिन उन्होंने अपना सार लेखन अपनी जातीय भाषा में करके अपनी जाति का सच्चा प्रवक्ता होने का परिचय स्वयं दे दिया है। वास्तव में अपनी जाति को सांस्कृतिक समृद्धि का परिचय डॉ. शर्मा ने ही दिया। 'रामविलास जी ने हिन्दी जाति की अवधारणा को प्रमुखता से रखते हुए कहा कि हिन्दी जाति का आज जो अलगाव है और जो ब्रिटिश काल की देन है, वह अलगाव दूर हुए बिना हिन्दी जाति को अनेक समस्याओं से मुक्ति नहीं मिल सकती। रामविलास जी की इन स्थापनाओं और निष्कर्षों को कुछ विचारक विरोधाभासी मानते हुए इनको मार्क्सवादी चिंतन की परिधि से परे मानते हैं। उनके आलोचक व्यक्तित्व को प्रगतिशील प्रतिभाओं को कुचलने वाला कहकर खूब कोसा गया है। इसके बावजूद रामविलास जी का काम, इतना महत्वपूर्ण और अकेला काम है कि वह अपनी सीमाओं के साथ, दूर-दूर तक राह दिखलाने वाला है। उनके काम की विशेषता है कि वे हिन्दी-जाति की ज्ञान समृद्धि के लिए चौतरफा पहल करने वाले सांस्कृतिक चिंतक हैं।'¹³

सन् सत्तावन की क्रान्ति से अंग्रेजों ने 'हिन्दी जाति' की क्षमता को पहचाना और इसे कमजोर करने के लिए जातीयता के सबसे बड़े घटक भाषा को बाँटने का सफल प्रयास किया। आज जिसे हम हिन्दी और उर्दू दो भाषाओं के रूप में जानते हैं वे वास्तव में खड़ी बोली से विकसित हिन्दी की दो अलग-अलग शैलियाँ हैं। उनमें केवल लिपि भेद है। इन्हें 19वीं सदी में अंग्रेजों द्वारा और बाद में भारत की अलगाववादी ताकतों द्वारा मजहबी रंग देकर अलग-अलग भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। 'बाँटो और राज करो' वाली अंग्रेजी नीति आज भी चल रही है। अपने देश की लगभग सभी राजनीतिक पार्टियाँ अघोषित रूप से उर्दू को मुसलमानों की भाषा के रूप में प्रोजेक्ट कर रही हैं जबकि

भाषा का संबंध कभी मजहब से नहीं होता। डॉ. शर्मा हिन्दी और उर्दू को एक मानते हैं। दोनों की समानता का विश्लेषण करते हुए डॉ. शर्मा विस्तार से लिखते हैं— 'किसी जाति की भाषा-समस्या पर विचार करते हुए हमें सबसे पहले उसके बोलचाल के रूप पर ध्यान देना चाहिए। क्या बोलचाल के रूप में हिन्दी-उर्दू दो भाषाएँ हैं? इसमें संदेह नहीं कि और बहुत कठिन 'हिन्दी' और बहुत कठिन 'उर्दू' बोली जा सकती है लेकिन आम लोग उसे बोलते नहीं हैं। इसलिए प्रेमचन्द का यह कहना ठीक था कि "बोलचाल की हिन्दी और उर्दू प्रायः एक-सी है।" उर्दू-हिन्दी के सर्वनाम एक हैं— वह, मैं, तू, हम आदि। हिन्दी-उर्दू की क्रियाएँ एक सी हैं—जाना, सोना, खाना, पीना, करना, मरना, जीना, लिखना, पढ़ना इत्यादि। आजमाना, गुजरना, लरजना जैसी क्रियाएँ बहुत थोड़ी हैं। कुल मिलाकर एक दर्जन से ज्यादा नहीं, जो फारसी-अरबी शब्दों के आधार पर बनी हैं। वे हिन्दी के लिए मतरूक नहीं हैं। बोलचाल में उनका प्रयोग बराबर होता है। हिन्दी-उर्दू के संबंध वाचक शब्द में, पर, से, का आदि—वही है जो हिन्दी के। दोनों का मूल शब्द भण्डार एक ही है लेकिन यहाँ बहुत दिनों तक फारसी के राजभाषा रहने से हिन्दी शब्दों के फारसी या अरबी पर्यायवाची शब्द भी प्रचलित हो गए हैं, जैसे देश-मुल्क, आकाश-आसमान, धरती-जमीन, भाषा-जबान, किसान-कास्तकार, नदी-दरिया, रोगी-बीमार इत्यादि। इन शब्दों का व्यवहार बोलचाल की हिन्दी-उर्दू में किसी भेदभाव के बिना होता है। देश, आकाश, धरती जैसे शब्द उर्दू साहित्यकारों की रचना में मिलेंगे और मुल्क, आसमान, जमीन जैसे शब्द हिन्दी साहित्यकारों की रचनाओं में। इसके सिवा हल, बैल, खेत, खलिहान, बीज, जुताई, बुवाई, कारखाना, मजदूर, काम, छुट्टी आदि हजारों ऐसे शब्द हैं जिनके पर्यायवाची शब्द बोलचाल की भाषा में व्यवहृत नहीं होते, साहित्यिक भाषा में भले होते हों। लखनऊ और हैदराबाद के हिन्दू-मुसलमान बोलचाल की भाषा में फारसी शब्दों का व्यवहार ज्यादा करेंगे, उन्हीं फारसी शब्दों की जगह बिहार और मध्य प्रदेश के मुसलमान हिन्दी या संस्कृत शब्दों का प्रयोग करेंगे। यह स्थानीय भेद हुआ। इससे दो भाषाओं का निर्माण नहीं होता।

हिन्दी-उर्दू का व्याकरण एक, वाक्य रचना एक सी, शब्द भंडार और क्रियाएँ एक-सी इसीलिए हिन्दी-उर्दू भाषियों की दो कौमें नहीं है। उनकी जाति एक है और बोलचाल की भाषा एक है।¹⁴हिन्दी जाति के अलगाव को खत्म करने की दिशा में स्वयं हिन्दी-जाति के विचारकों के मन में भी अनेक शंकाएँ हैं। जैसे नामवर जी भी इस बात से सहमत हैं कि उर्दू वालों के लिए हिन्दी-जाति की अवधारणा, फासिस्ट अवधारणा है। जबकि डॉ. शर्मा हिन्दी-उर्दू दोनों भाषाओं को एक करके देखते हैं। उन्होंने महान शायर गालिब को हिन्दी जातीय विरासत के रूप में देखा है—'गालिब की रचनाएँ हिन्दी लेखकों की सांस्कृतिक परम्परा का अभिन्न अंग बन चुकी हैं। इकबाल, कृष्णचन्द्र और जोश राष्ट्रवादी-जनवादी संस्कारों के रचनाकार हैं। उर्दू की सांस्कृतिक परम्परा को आज वही घटनाक्रम, वही सामाजिक परिस्थितियाँ, वही संघर्ष रच रहे हैं, जो हिन्दी की सांस्कृतिक परम्परा को रच रहे हैं।'¹⁵

भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश में हिन्दी प्रदेश की जातीयता का विकास एक बड़े सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में आया है पर हिन्दी जाति पर उनके विचार 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' (1953) में ही आ चुके थे। उन्होंने लिखा है—'भारतेन्दु ने जिस संस्कृति की नींव डाली, वह सारे देश के लिए थी, लेकिन वह हिन्दी भाषी जनता के लिए विशेष थी। जातीय संस्कृति के विकास के लिए अंग्रेजी, संस्कृत और अरबी-फारसी के मुकाबले में अपनी भाषा का महत्व प्रतिष्ठित किया। भारतेन्दु शायद पहले लेखक हैं, जिन्होंने 'जाति' शब्द का 'नेशनलिटी' के अर्थ में प्रयोग किया है।'¹⁶

डॉ. शर्मा ने सन् 1857 को भारत का पहला स्वाधीनता संग्राम और हिन्दी नवजागरण की पहली मंजिल मानते हुए उन्होंने भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचन्द, आचार्य शुक्ल और निराला के युगान्तकारी महत्व के लिए वैचारिक संघर्ष किया, लेकिन अपनी आलोचना का महानायक बनाया तुलसीदास के बाद निराला को। उन्हें इनके समक्ष प्रायः सभी बौने दिखे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. -वही, पृ. 55
2. डॉ. रामविलास शर्मा, भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1977, पृ. 357
3. डॉ. रामविलास शर्मा, भारत की भाषा समस्या, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978, पृ. 50-65
4. डॉ. रामविलास शर्मा, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, व.सं. 1999, पृ. 55 निराला को। उन्हें इनके समक्ष प्रायः सभी बौने दिखे।